श्री गुरू जम्भेश्वराय नमः

विश्नोई धर्म विवेक

सम्पादक व संग्रहकर्त्ता

स्वामी आत्मप्रकाश 'जिज्ञासु'

श्री जगद् गुरू जम्भेश्वर संस्कृत विद्यालय

मुकाम, तहसील नोखा, जिला बीकानेर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

श्री जगद् गुरू जम्भेश्वर संस्कृत विद्यालय

मुकाम, पोस्ट हिम्मटसर

त. नोखा, जिला बीकानेर (राज.)

फोन : 01531–266655, 266729

मुद्रक :

जम्भेश्वर ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस

बज्जू, त. कोलायत,

जिला बीकानेर (राज.)

फोन : 01535–233037

मुल्य : 15 रूपये मात्र

Rs. 5-00

ॐ जम्भेश्वरः नमः

विश्नोई धर्म विवेक

दो शब्द

प्रिय पाठक वृन्द,

आपके सामने लघुकाय विश्नोई धर्म विवेक नाम पुस्तक छपकर प्रस्तुत है जो प्रथम बार स्वामी रामदासजी ने सम्वत् 1955 में छपवाई थी वही पुस्तक की मांग को ध्यान में रखते हुए मैं द्वितीय बार प्रकाशन करवा रहा हूँ। यह पुस्तक स्वामी ब्रह्मानन्दजी के द्वारा वि.सं. 1971 एकादशी कृष्ण पक्ष भाद्रपद को कांठ में लिखी हुई प्राचीन पुस्तक है पाठको को अच्छी तरह से समझने के लिए प्रश्न व उत्तर के माध्यम से समझाया गया है।

अतः इस पुस्तक में प्रेस सम्बन्धी कोई त्रुटियां रह गई है तो कृपया उसे हमारे ध्यान में लाया जाऐं ताकि आगामी प्रकाशन में सुधार किया जा सके।

आपका

स्वामी आत्मप्रकाश ''जिज्ञासु''

✡श्रीशः पायात✡

अथ आरति लिख्यते

आरति होजी सम्भराथल देव । विष्णु हर री आरती जे।। सुर तेंतीसां सेवक जाके इन्द्रादिक सब देव । ज्योति सरूपी आप निरन्जन ।।कोई एक जानत भेव । विष्णु हर री आरती ।।1।। पूर्ण सिद्ध जम्भ गुरू स्वामी अवतरे केवली एक । अन्धकार नाशनके कारण हुए आप अलेख । विष्णु हर री आरती।।2।। सम्भराथल हरि आन विराजे तिमिर भयो सब दूर ।। सांगा राणां और नरेशां आये सकल हुजूर । विष्णु हर री आरती ।।3।। सम्भराथल की अद्भूत शोभा वर्णी न जात अपार। सन्त मण्डली निकट बिराजै निर्गुण शब्द उचार । विष्णु हर री आरती ।।4।। वर्ष इक्यावन देव दयाकर कीन्हों पर उपकार । ज्ञान ध्यान के शब्द सुनाये तारण भव जल पार । विष्णु हर री आरती ।।5।। पन्थ जांभाणो सत्य कर जाणें यह खांडे की धर । सत प्रीत सूं करो कीर्तन ।। इच्छा फल दातार । विष्णु हर री आरती।।6।।आन पन्थ को

चित्त से टारो । जम्भेश्वर उर ध्यान । होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो पावो पद निर्वाण । विष्णु हर री आरती ।।7।। भक्त उधारण काज सवांरण । श्री जम्भ गुरू निज नाम ।। विघ्न निवारण शरण तुम्हारी मंगल के सुख धाम । विष्णु हर री आरती ।।8।। लोहटनन्दर दुष्ट निकन्दन श्री जम्भ गुरू अवतार । ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की आवागवण निवार । विष्णु हर री आरती ।।9।। आरती होजी सम्भराथल देव । विष्णु हर री आरती जे थांरी करे हांसलदे माय ।।

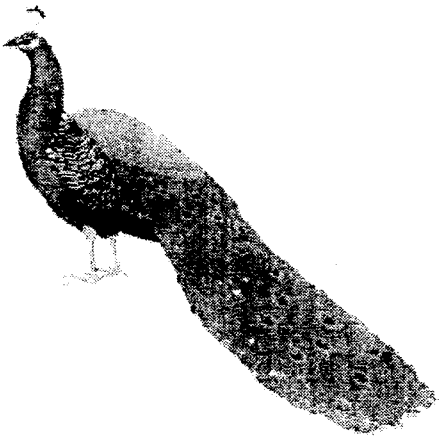

॥ श्री जम्भेश्वराय नमः ॥

प्रश्नः बिश्नोई किसी जाति का नाम है वा किसी मत वा मजहब का ?

उत्तरः बिश्नोई यह शब्द यद्यपि मत का ही वाचक है, अर्थात बिश्नोई एक मत वा पंथ का नाम है परन्तु मत के विशेष सम्बन्ध से यह बिश्नोई शब्द जाति परक् हो गया– जैसे बौद्ध एक मत का नाम तो अवश्य है परन्तु जो उस मत समुदाय में है वह भी बौद्ध कहाता है, तथा संन्यासी गोसांई यह भी एक प्रकार का मत ही है– परन्तु उसमें मिलने वाला गोसांई वा संन्यासी नाम से प्रसिद्ध होगा और लोक में भी सर्वत्र गोसांई कहावेगा–तात्पर्य यह है कि जो एक जुदाही मत हो जाता है और जिसके नियम भी अन्य मतों से किसी विषय में विलक्षण होते हैं और पाणिग्रहण (विवाह) सम्बन्ध भी ऐक्य मतावलम्बियों का अपने ही में होने लगता है और दूसरों से कि जिनको वह मत स्वीकृत नहीं है सजातीय होने पर भी जिन्होंने मत के नियमों को स्वीकार नहीं किया हो पाणिग्रहण और भोजनादि सम्बन्ध नहीं रखते तो उनकी भी एक जाति वा कौम एक पृथकही हो जाती है ।

प्रश्नः तो क्या बिश्नोई मतानुयायी बिश्नोई के बिना अन्य द्विजाति के साथ भी बिवाह भोजनादि व्यवहार नहीं करते?

उत्तरः नहीं करते– बिश्नोई लोगों का बिवाह सम्बन्ध भी बिश्नोईयों में होता है और मत के आरम्भ से लेकर आज तक यह प्रथा बराबर चली आती है–यद्यपि इस समुदाय में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और जाट जाति के मनुष्य हैं परन्तु इनका अर्थात बिश्नोईयों का अन्यों के साथ बिवाह भोजनादि सम्बन्ध कदापि नहीं होता इतयादि कारणों से मत के पृथक होने के साथ हीयह जाति भी पृथक् और एक रूढ़ि हो गई– उदाहरण के लिये हम फिर गृहस्थ गोसांई को बताते हैं कि जैसे गिरी पुरी आदि दश नामी गोसांईओं में जाति के सभी मनुष्य होते हैं परन्तु उन सबकी गोसाई संज्ञा होती है और वह गोसांई संज्ञा ही एक जाति जैसी बन गई और उनका पाणिग्रहण सम्बन्ध भी आपसही में होता है– तो इसी प्रकार गोसांईओं के सदृश, यह बिश्नोई शब्द मत और जाति बोधक है– गोसांइओं के सदृश, इस वाक्य का तात्पर्य यह नहीं समझना कि काषायाम्बर धारी गोसांईओं के समान यह बिश्नोई लोग भी भगवां बस्त्र शिर पर बाँधने वाले सिद्ध हो गये केवल दृष्टांन्त से

यद्यपि मिलता है और स्वयं मत प्रचारक आचार्य ने भी कई बातों को करने में अपने शिष्यों को गोसांइयों का अनुकरण करना लिखा है तथापि ऐसा होने से यह मत न गोसांइओं की शाखा और न गोसांई नामरूप हो सकता है–किन्तु स्वतंत्र जुदा एक मत है ।

प्रश्नः क्या यह मत सर्वथा स्वतंत्र है अर्थात किसी मत से निकला नहीं समझा जाता वा किसी की शाखा समझा जाता है ?

उत्तरः नहीं यह सर्वथा एक स्वतंत्र मत है किसी की शाखा नहीं और स्वतंत्र ही एक मत भी मत प्रसंग में लिखना वा कहना चाहिये।

प्रश्नः तो इस मत में कौन कौन जाति के लोग हैं?

उत्तरः ब्राह्मण, क्षात्रेय, वैश्य ।

प्रश्नः इनका परम पूज्य इष्टदेव कौन है ?

उत्तरः श्री बिष्णु ही परम उपास्य वा इष्टदेव हैं ।

प्रश्नः क्या ये लोग किसी मूर्ति की पूजा करते हैं और क्या आचार्य का उपदेश किसी मूर्ति पूजा करने का है ?

उत्तरः नहीं आचार्य का उपदेश किसी काष्ठ पत्थर धातु

की बनी मूर्ति के पूजने का नहीं है हां अग्नि की पूजा तो करते हैं और इस मत के आचार्य का उपदेश भी है।

प्रश्नः अग्नि की पूजा का क्या काम है अर्थात् अग्नी में किसी पशु की क्या बलि देते हैं जैसे पहले समय में बहुधा हिन्दू दिया करते थे?

उत्तरः नहीं अग्नि में किसी पशु का बलिदान नहीं किया जाता केवल घृत कर्पूर अष्टगन्ध नारेल चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ अग्नि में होमते हैं और जीव हिंसा के करने का इस मत में सर्वथाही निषेध है ।

प्रश्नः क्या अग्नी पूजा वा होम करने का कोई बड़ा दिन भी नियत है जिस दिन सब लोग नागरिक एकत्रित होकर होम करते हों ?

उत्तरः हां एक विशेष दिन भी नियत है अर्थात् अमावस्या– और अमावस्या में सब नागरिक एकत्रित (इकट्ठे) हो जाते हैं और होम करते हैं ।

प्रश्नः उस पाठ का आशय क्या है और वह क्या इस मत के आचार्य का उपदेश है और उसका कहीं सम्बन्ध किसी शास्त्र से है ?

उत्तरः जो पाठ प्रथमही प्रथम पढ़ा जाता है उसमें केवल

अग्नि के प्रशस्त गुणें का वर्णन एवं अग्निदेव की स्तुति और प्रार्थन है—और फिर आचार्य की बाणी का पाठ पड़ते हैं और उसमें केवल परमेश्वर प्राप्ति की शिक्षा एवं सन्मार्ग में चलने का उपदेश है और वह उपदेश प्रायः उपनिषदों अर्थात् ब्रह्मबिद्या के ग्रन्थों से विशेष सम्बन्ध रखता है, और अग्नि की स्तुति प्रार्थना का पाठ सर्वथा यजुर्वे के अग्नि महिमा विषयक मन्त्रों से सम्बन्ध रखता है।

प्रश्नः क्या ये लोग आमिष भक्षण नहीं करते, मद्य नहीं पीते, हुक्का नहीं पीते ?

उत्तरः नहीं, मांस भक्षण करने वाले मनुष्य की संख्या का तो सर्वथा इस मत में अभाव है। आमिष भक्षण कर्त्ता को और मद्यप को एक दम इस मत वा जाति से निकाल दिया जाता है और यही आचार्य की मुख्य शिक्षा है—और हुक्का पीनेवाले का प्रायश्चित कराया जाता है और कोई हुक्का नहीं पीता ।

प्रश्नः तो हम इस मत को किस नाम से पुकारें ?

उत्तरः श्रीजाम्भाणी पंथी या बिश्नोई नाम से कहना चाहिये ।

प्रश्नः अच्छा तो उन शिक्षाओं का वर्णन करो जो श्री जम्भदेव जी ने अपने शिष्यों को सुनाई और जिनपर चलने की आज्ञा दी हो ?

उत्तरः वे शिक्षा तो मुख्य कर 29 उन्तीस हैं और जो इस मत के नियम रूप से प्रख्यात हैं और वे धर्म वा नियम यह हैं ।

1– सदा सूर्योदय से पहिले उठना और स्नान करना ।

2– उपासना श्री बिष्णु पद वाच्यार्य देव की करना ।

3– प्रातः और सांय काल श्री बिष्णु का स्मरण ध्यान करना अर्थात दोनों समय सन्ध्या करनी ।

4– प्रतिदिन अग्नि देव पूजा अर्थात होम करना।

5– सूतक 30 दिन तक मानना और 30 दिन तक समस्त गृहस्थ कामों से स्त्री को अलग रखना।

6– रजस्वला स्त्री को पांच दिन तक पृथक् रखना गृहस्थ समस्त कामों से ।

7– शील रूप व्रत्त का पालन करना अर्थात् व्यभिचारी न होना ।

8– सन्तोष अर्थात शक्त्यनुसार पुरूषार्थ करना और हानि लाभ में शोक हर्ष नहीं करना ।

9– बाह्याभ्यन्तर से शुचि अर्थात पवित्र रहना।

10–बाणी का संयम करना ।
11–जल दूध को छान कर पीना ।
12–क्षमा दया को हृदय में सदा स्थान देना।
13–हिंसा न करना और जीव रक्षा के करने कराने में सदा समुद्यत रहना ।
14–चोरी का मन बचन देह से त्याग करना।
15–निन्दा किसी की नहीं करना ।
16–अनृत भाषण न करना । (झूठ नहीं बोलना)
17–वाद विवाद का त्याग करना ।
18–अमावस्या का व्रत रखकर यज्ञ करना।
19–भोजन अपने ही सम्प्रदायी मनुष्यों से भिन्न के हाथका न पाना ।
20–कसाई को पशु न देना और न बैल बधिया कराना।
21–हरे वृक्षको न काटना (विशेष कर) खेजड़ी वृक्ष को। इस मत में खेजड़ी वृक्ष को सत्यगुग की तुलसी बताते हैं ।
22–कदापि मांस भक्षण न करना ।
23–पशु धर्मशाला बनाना और यथोचित रीति से गौ आदि पशुओं की रक्षा करना कराना चाहिये ।
24–इन्धन बलीता देख भाल व ठांक कर जलाना।
25–मद्य का स्पर्श तक भी न करना ।

26—अमल (अफीम) भांग चड़स गांजा चंडू तमाखू न खाना पीना ।

27—अन्त्यज और दुराचारियों के संग से सदा बचना।

28—इन्द्रियों का दमन करना और निर्वाण के अर्थ प्रयत्न करना ।

29—नील बस्त्र न पहरना ।

ये विश्नोई मत के 29 धर्म हैं जिन का उपदेश भगवान श्री जम्भदेव जी ने किया है।

प्रश्नः यह हमने जाना कि यह मत परमार्थ सिद्धि में अग्रण्य है यह नियमों के अवलोकन से सम्यक् जाना गया, परन्तु यह बताओ कि भारतवर्ष में वर्त्तमान में अधिकांश कौन लोग हैं जो बिश्नोई हैं ?

उत्तरः भारतवर्ष में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य वर्ण से ही विश्नोई बने है।

प्रश्नः क्या इन लोगों का भोजन सब का एक है भिन्न है?

उत्तरः कुछ भिन्नता नहीं सब बिश्नोई लोगों का शाकाहारी भोजन एक है ।

प्रश्नः अपने मुर्दो को क्या आग में जलाते हैं वा समाधि

देते हैं वा जल में बहाते हैं ?और जो भी कुछ करते हैं क्या उनके किसी पुस्तक में उसका मूल है ?

उत्तरः अपने मुर्दा को विशेष कर जल में बहाते वा समाधि देते हैं—और ऐसे ही आचार्य की आज्ञा है अर्थात् श्री जम्भदेव जी के प्रशिष्य श्री वील्ह स्वामी ने लिखा है कि श्री गुरू महाराज आज्ञा करते हैं कि शंकराचार्य मत प्रमाण—"जल भूमि दाग लो जाण" अर्थात हे शिष्य लोगों तुम अपने मुर्दो को जल में बहाओं वा समाधि देओ मुर्दे के समान करो अर्थात प्रेत शव (मुर्दे) की अन्तयेष्टि क्रियाकर्म करने विषयक दश नामी संयासीयों का अनुकरण करो अर्थात समाधि लगाओ ।

प्रश्नः जन्म विवाह मरण प्रभृति में संस्कार कौन कराता है और मत के गुरू ने किसको आज्ञा दी है ?

उत्तरः संस्कार करने कराने का अधिकार आचार्य ने थापन व इस मत के यतियों (साधुओं) को दिया है और ऐसा ही बर्ताव अद्यावधि चला आता है और वर्त्तमान है। लेकिन सुगरा (गुरूदीक्षा) संस्कार इस मत के यतियों को ही अधिकार दिया है।

प्रश्नः ये लोग क्या सच ही मांस भक्षण नहीं करते और

क्या किसी पशु वा पक्षी को नहीं मारते ?

उत्तरः मांस खानेवाला प्राणी अभी तक इस समुदाय में कोई नहीं है यह हम पीछे कह चुके हैं और न किसी हरिणादि पशु पक्षी को कोई मार सकता है प्रत्युत मारनेवालों को जहां तक हो सके नहीं मारने देते और बहुधा बर्त्तमान और पूर्बकाल में हरिणादि पशु और मयूर कबूतर आदि पक्षियों के मारने शिकार खेलने पर अपने आप बलिदान हो गये और खेजड़ी वृक्ष को भी अपनी सीमा में नहीं काटने देते। खेजड़ी वृक्ष के काटने से आप मर गये–ऐसा सैकड़ों स्थानों में हुवा है श्री बील्ह स्वामी ने लिखा है कि खेजड़ी का वृक्ष सत्ययुग का तुलसी का वृक्ष है–अर्थात दो बातें इनके अतयन्त बिपरीत है और इनहीं दो बातों से कहीं कहीं पहिले अज्ञातपन से राज मारवाड़ वा हिसार आदि प्रांत में शिकार खेलने वा खेजड़ी हरी काटने पर बहुत से धर्मवीर बिश्नोइयों की जान गई। जब यह वृत्तांत राजाओं के कानों में पहुँचा तो उन्होंने फिर अपने राज्य में बिश्नोई सीमा में शिकार न खेलने और नीली खेजड़ी न काटने की आज्ञा दी और अपने अपने धर्मानुशासन पत्र भी लिख दिये।

प्रश्नः क्या कोई बादशाह और राजाओं का हुक्मनाम इनको दिया गया है कि बिश्नोई सीमा (सरहद) में शिकार न खेले व हरी खेजड़ी न काटे ?

उत्तरः हां राजाओं और बादशाहों ने शिकार न खेलने और हरी खेजड़ी न काटने का हुक्मनाम लिख दिया था जिसमें बादशाह सिकन्दर लोदी और बाबर आदि के दिये हुक्मनामें तों जो तांबे के पत्र पर वा कागज पर लिखे हुये हैं–बीकानेर से 20 कोस तालवे नामक ग्राम में (जहां पर श्री जम्भदेव की समाधि है) थापनों के पास मौजूद हैं, और राजा महाराजाओं के भी बहुधा उनके पास हैं और अन्यत्र भी किन्हीं किन्हीं के पास मारवाड़ में मिलते हैं जिनमें से हमारे हाथ भी दो पत्र जोधपुर के राजा श्रीमान् भीमसिंह जी और तखतसिंह जी के आये हैं जिन्हें उपयुक्त जान कर लिखते हैं ।

नकल पत्र की यह है

।। श्रीपरमेश्वर जी सत्य छै।।

श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री भीमसिंह की बचनात् (हुक्म से) जोधपुर वगैरे परगना सम सुतरां गांव रा पटायतां दिसे तथा विश्नोइयां सु लाग जो सदा मन्द लागै है तिण माफक लीजो सिवाय खेचल न हुवै। (विक्रम) सम्वत् 1851 आसौज सुदी 12

गढ़ जोधपुर ।

पत्र दूसरा श्री महाराजा तखतसिंह जी का

।।श्री परमेश्वर जी सत्य छै।।

श्री राजराजेश्वर महाराजाऽधिराज श्री तखतसिंह जी बचनात् थापन बिश्नोईयां रां गांवां री सीव मै। नीली खेजड़ी कोई वाढ़ण (काटने) पावै नहीं, सिकार खेलण पावै नहीं, कोई नीली खेजड़ी वाढ़सी सिकार खेलसी सो दरबार से गुनोगार हो सी–सम्वत्1900 (बिक्रमीय) बैशाख बदी 1– गढ़ जोधपुर ।

प्रश्नः क्या सिकार खेलना अपनी सीमा में बुरा समझते हैं तथा हरी खेजड़ी का काटना बुरा समझते हैं ?

उत्तरः हां, बहुत बुरा समझते हैं और हिन्सा कर्म सर्वथा इस मत के बिपरीत है ।

प्रश्नः क्या इन लोगों में किसी मत बिपरीत काम करने पर कुछ प्रायश्चित्त किया जाता है?

उत्तरः हां, किया जाता है और सब प्रायश्चित्त बिधि वही होती है जो सर्व साधारण द्विजातिओं में होती है इतना इस मत में अधिक होता है कि अन्य सब बिधि होने पर भी प्राश्चित्त ठीक नहीं समझा जाता जब तक कि गुरू

पौहल सिक्खों की भाँति नहीं पिलाया जायगा ।

प्रश्नः किस बिशेष अपराध में बिरादरी से खारिज बिलकुल किया जाता है ?

उत्तरः जो मांस भक्ष्ण और मद्य पान करने लगे और अन्त्यजों का संग करे और अन्त्यजों के हाथ का खाने पीने लगे तो निश्चय हो जाने पर अवश्य एक दम मत वा जातीय वाह्य होगा—और होता है—और फिर कभी उस को इस मत में नहीं मिलाया जायगा और सामान्य अपराध करने पर जो 29 धर्मो के बिपरीत होगा कुछ दण्ड और प्रायश्चित्त बिना नहीं मिलाया जायगा ।

प्रश्नः क्या सर्वत्र इसी नाम से प्रसिद्ध हैं परन्तु अवधादि प्रान्त में जाम्भापंथी नाम से भी प्रसिद्ध हैं?

उत्तरः इस ही नाम से बिशेष प्रसिद्ध हैं ।

प्रश्नः इन लोगों का रोजगार सब का क्या है और क्या कोई जमींदार वा रईस अमीर भी इन लोगों में है और कोई अंग्रेजी वा किसी भाषा में व्युत्पन्न हैं इन सब बातों का उत्तर ठीक ठीक देना चाहिये ?

उत्तरः सर्वत्र मारवाड़ और हिसार प्रान्त में कृषिकार हैं

अर्थात् खेती करते हैं और मारवाड़ राज्य में पंचमांश राज्य लेता है अर्थात पांच मन में से एक मन राज्य का और 4 मन कृषिक का परन्तु अब तो वहाँ पर भी प्रंचमांश का केवल नाम मात्र है आधा ही पड़ता है और कहीं कहीं हिसार प्रान्त में कोई कोई जमींदार भी हैं– और अन्यत्र मेरठ प्रान्त में बहुधा कोई बणिज व्योपार वा कृषिक वृत्ति से आजीवन करते हैं और बिजनौर मुरादाबाद प्रान्त में भी बहुत से घोड़ा गाड़ी से बहुधा जमींदारी से बहुधा तिजारत दुकान से आजीवन करते हैं, एक दो रईस भी मुरादाबद प्रान्त में हैं–और बहुत से अंग्रेजी फारसी लिखे पढ़े भी सरकारी नौकर हैं कोई तहसीलदार और बकील हैं कई थानेदार और फारेस्ट्रेंजर भी हैं और बहुत से डाक्टर हैं–इत्यादि प्रकार से अपना आजीवन करते हैं तथा जब्बलपुर और अवधादि प्रान्त में भी जहां जहां निवास करते हैं प्रायः सब उक्त कृत्यानुसार अपना आजीवन करते हैं यह संक्षेप से वर्णन किया गया ।

प्रश्नः अच्छा तो अब यह बताइये कि श्री जम्भदेव जी का अवतार कौन सम्बत् में हुआ ?

उत्तरः अवतार ब्रिक्रमीय बत्सर 1508 बादश्याह बहलूल

लोदी के समय राज मारवाड़ के पीपासर नाम ग्राम में हुवा ।

प्रश्नः क्या अवतार किसी सरदार वा राज्य बंध में हुवा समझा जाता है ?

उत्तरः हां अवतार राज्यबंश में हुवा अर्थात राजा ब्रिक्रमादित्य अवन्तिका (उज्जैन) वाले प्रमर गोत्री (पुवार गोतवाले) के बंश में हुवा ।

प्रश्नः अवतारी के माता पिता का नाम और कुल जात वा गोत का बर्णन करो।

उत्तरः अवतारी के पिता का नाम श्री लोहट क्षत्रिय कुल पवांर गोत्र और माता का नाम श्रीमती केशर जिनका उपनाम हांसा भी प्रसिद्ध है ।

प्रश्नः भाटी गोत्र क्या क्षत्रियों का होता है?

उत्तरः हां, राजपूताने में भाटी गोत्री क्षत्रिय अति प्रसिद्ध है। तथा जैसलमेर का राजा भाटी है।

प्रश्नः पीपासर ग्राम जिसमें अवतार हुवा किसी प्रसिद्ध नगर से कितनी दूर और किस कोण में है ?

उत्तरः नागौर से 16 कोस उत्तर कोण में है ।

प्रश्नः क्या अब उस ग्राम में अवतार होने की जगह कोई स्थान मन्दिर बर्तमान है ?

उत्तरः हां उस जगह अब एक छोटा सा मन्दिर शिवालय के आकार युक्त बना बिद्यमान है।

प्रश्नः अवतार होने के बिषय में इस मत में क्या कोई इतिहास ऐसा है कि जैसा अन्य अवतार रामकृष्णादि की अपेक्षा प्रसिद्ध है कि अमुक अमुक निमित्त विशेष से अवतार हुवा ?

उत्तरः हां है ।

प्रश्नः वह क्या है ?

उत्तरः इस मत में अवतार होने विषयक अर्थात जिस निमित्त बिशेष को लेकर अवतार हुवा वह इति हास इस प्रकार है कि जब नारायण ने नृसिंह अवतार लेकर प्रहलाद भक्त की रक्षा की थी, उस समय नृसिंहावतार के प्रहलाद ने अभ्यर्थना की थी कि आप प्रत्येक युग में अवतार धारण कर भक्तों का उद्धार करने का बचन दो फिर नृसिंहजी ने इस बात को स्वीकार किया और प्रतिज्ञानुसार त्रेता में श्री रामचन्द्र द्वापर में श्री कृष्णचन्द्र कलियुग में श्री जम्भदेव जी प्रगट हुये और बारह कोटी

प्राणियों का उद्धार किया ।

प्रश्नः क्या इनको कोई योगी राजा सन्त बाल्यावस्था में कहीं मिला था ?

उत्तरः हां, सोलह वर्ष की आयु में बाला गोरखयती मिले थे—और उनसे ब्रह्मज्ञान विषयक अनेक वार्तायें हुंई

प्रश्नः संक्षेप से उनकी सिद्धयों का कुछ बर्णन करो जो ठीक ठीक इस मत के पुस्तकों में लिखा हो।

उत्तरः 11 वर्ष की आयु में श्री जम्भेश्वर जी ने दूदाराव को सिद्धि परिचय यह दिया कि मेड़ते का राज्य अपने बचन से दिया और आकाश मार्ग से इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में रात्रि में सिकन्दर लोदी को दर्शन दिया और दो भक्तों को बन्धन से छुड़ाया और सिकन्दर को उपदेश दिया कि गोबध का त्याग कर दे फिर सिकन्दर लोदी ने शपथ की कि मैं आमिष भक्षण न करूंगा और न गोबध कराऊंगा और सिकन्दर एक दो बार इन अवतारी के पास सम्भराथल भी दरसन करने आया था और धर्म रक्षार्थ एक हुक्मनामा भी लिखा था और अजमेर में नेतसिंह को बन्दीगृह से मल्लुखान को स्वप्र में दर्शन और उपदेश देकर अपनी सिद्धिबल से छुड़ाया

जिस के छुड़ाने को जोधपुर से रावसान्तल जी और बीकानेर से राव वीका जी और मेड़ते से रावदूदा जी आदि सेना लेकर गये थे परन्तु इसी बीच में जब राव शान्तल को दूदाराव के द्वारा श्री जम्भेश्वर जी पर सिद्धिबल से छुड़ाने का पूरा बिश्वास हुआ और रावशान्तल जी ने प्रार्थना नेतसिंह के छुड़ाने के विषय में करी तो तत्क्षण ही राजों का मनोरथ सिद्ध किया । मल्लुखान श्री जम्भदेव जी के पास वहीं चला जहांपर सब राजा सेना लिये युद्ध करने को सुसज्जित थे और उपदेश सुनकर गोबध त्याग करने की शपथ की और बारम्बार चरणों में सिर झुकाकर अजमेर चला गया–375 सदावर्त नियत किये जो किसी के सहाय से नहीं चलते थे किन्तु अपनी सिद्धिबल से चलाते थे सम्बत् 1542 में लक्षों प्राणियों के अन्न जल दान से प्राण बचाये महाराणा सांगा जी का मनोरथ सिद्ध किया और राजा जैतसिंह जैसलमेर वाले का कुष्ट रोग नाश किया और अनेक अन्धों को नेत्र दिये बहुत ऐसे रोगी कि जो अपने जीवन से हताश हो गये थे वे भी दर्शन करते ही आरोग्य हो गये यथा अल्लुचारण ने अपने रोग से अव्याहति पाकर श्री जम्भदेव जी की स्तुति में यह कवित्त "कबित्त अल्लुचारण कृत"

"वैद्य योग बैराग खोज दीठा नर नंगम । संन्यासी यदुरबेश सेख सोफी और जंगम ।। ब्यथा व्यापी मोहि आज आसा घर आयो । जीम्यो अन्न आहार पेट सुख परचो पायो ।। चार वेद होता चलू पांचवां बेद सांभल्या शब्द के बली जम्भ सांवल कंबल आज साच पायो अल्लु"–इसका भावार्थ यह है कि मैंने (अल्लुचारण ने) देश देशान्तरों में अनेक बैद्य और योगी बैरागी बिरक्त सन्यासी सिद्ध ऋृषि मुनि सभी देखे और रोग निवृत्त्यर्थ सब के आगे अभ्यर्थना भी की परन्तु रोग से छुटकारा न पाया–आज आप के दर्शन करते ही सब के आगे अभ्यर्थना भी की परन्तु रोग से छुटकारा न पाया–आज आप के दर्शन करते ही सब ब्याधियां निर्मूल हो गई और चार बेद तो आज तक सुनते सुनाते चले आते ही थे परन्तु पांचवां बेद अब शब्दोपदेश रूप केवली जम्भगुरू से सुना और सच्चा विश्वास पाया–बादशाह और राजाओं के भी आज्ञाकारी होने के विषय में यह कबित्त है "दिल्ली सिकन्दर शाह देव परचों परचायों । महम्मदखान नागौर परच गुरू पायें लाग्यो–रावल जैसलमेर परच ते संशय भाग्यो– सन्मुख शांतलराव हुयो शील सिनानी– सांगाराणा सीख गुरू कही सो मानी–छवरा जिन्दर परचियो और आचारे

ओलख्यो–बील्ह कह मागुं पुनः जहां मुक्ति नै हाथो दिया" ।। और राटू पुरी में एक क्षण में बाग लगा दिया और नवाब मलेर कोटले पंजाब से गोबध का त्याग अपनी सिद्धि परिचय से कराया और अज्ञाना नामक नास्तिक तांत्रिक को अपना शिष्य बनाया और एक समय जोधा जी राजा के पुत्र बीदा जी ने श्री जम्भदेव जी से कहा था कि जैसे आप इस बालुथल पर बिराजमान हो कर उपदेश कर रहे हैं इसी प्रकार जब तक शतशो रूप धारण कर अनेक नगर ग्रामों में एक ही समय में बिराजमान न होंगे तक तक मैं कभी अवतार मानूंगा । देखिये जब श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को बिराट रूप का दर्शन कराया और अर्जुन को सर्वथा सिद्धि से सन्तोष हुवा तब श्री कृष्ण जी का बचनानुगामी अर्जुन हुआ था–इसी प्रकार आप भी मुझको बिराट रूप दिखावें मैं बिराट् रूप इसी में मान लूंगा कि आप सहस्रों देह से अनेक जगह दर्शन एक ही समय में देवें और मै। आप के समीप यहां हीं बैठा रहूंगा अर्थात आप को तो नहीं जाने दूंगा और चारो और पहरा रखूँगा और परीक्षा के लिये प्रत्येक नगर ग्राम में जहां तहां पत्र और अपने नौकर भेज दूंगा निदान इस प्रकार जब बीदाजी ने कहा तो फिर श्री जम्भदेव ने आज्ञा दी कि जो कोई दिन तूं नियत करेगा और सर्वत्र सूचनापत्र अनेकशः

स्थानों में भेज देवेगा उसी दिन सर्वत्र दर्शन होने का समाचार तूं अवश्य सुनेगा फिर ऐसा ही हुवा अर्थात श्री देव ने सहस्रों स्थानो में एक ही समय दर्शन दिये और बीदाजी को बिश्वास आया और बिश्नोई धर्म रक्षार्थ यथावत् प्रयत्न करने में समुद्यत हुआ–बिशेष बृत्तान्त देखने वालों को उचित है कि श्री जम्भदेव का जीवन चरित्र देखें जो हमने बड़े ाम से संग्रह किया और और प्रचलित सुगम भाषा में लिखा है जो मुद्रित हो गया है ।

प्रश्नः तो जब ये लोग विष्णु के उपासक हैं तो इनको बैष्णव कहना चाहिये फिर क्यों नहीं बैष्णव कहते क्या बैष्णव कहने में कुछ बुराई समझते हैं वा बास्तव में बुराई हैं ?

उत्तरः वैष्णव कहने में कोई हानि नहीं और बैष्णव कहना भी योग्य है क्योंकि बैष्णव शब्द का अर्थ यह है कि "वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् बिष्णुः" विशूल व्रूाप्तौ विष्णोरयम् भक्तो वैष्णवः ।

सब स्थावन जंगम रूप जगत् व्यापक होने से परमेश्वर का नाम बिष्णु है बिष्णु को जो भक्त वा उपासक हो वह वैष्णव कहाता है सो मुख्य उपासक ये लोग बिष्णु ही के हैं और आचार्य ने उपदेश भी 29 धर्मो

के अन्तरगत बिष्णु की उपासना करने का स्पष्ट किया है परन्तु चिरकाल से 29 धर्मो का सेवन वा पालन करने से और अपने को 29 धर्मानुयायी कहने के कारण इसी अर्थात बीसनोई नाम से प्रसिद्ध हो गये और हैं । इसने प्रसिद्ध शब्द का ही प्रयोग किया ।

प्रश्नः क्या यह मत सनातनीय है ?

उत्तरः हां यह मत सनातन का है, क्या पहिले समय सत्य युगादि में बिष्णु उपासक वा अग्नि पूजक नहें थे, वा इन 29 धर्मो के सेवी नहीं थे, देखो महाभारत में बिष्णु के सहस्रनामों का बर्णन व्यासजी ने कैसी प्रीति पूर्वक सुना पढ़ा, जो भी इन धर्मो के सेबी पूर्वकाल में थे वे सभी बीसनोई कहाने के अधिकारी थे और जो अब हैं वा होंगे वे भी बैष्णव पद का वाक्यार्थ बैरागियों में चरितार्थ हो सकता है वा नहीं यह बुद्धिमानों को चिंतनीय है श्री जम्भेश्वर जी ने अवतार लेकर घोर कलिकाल में निष्पक्ष हो कर केवल सत्यधर्म का उपदेश किया हां जिन लोगों ने दृढ़ता के साथ उन बचनों को शिरपर धारण किया और जो लोग बड़े परिश्रम से धर्म की और लगाये गये थे ऐसा न हो कि फिर अन्यों के संसर्ग वा मेल से धर्म से रहित हो जावें ऐसा जानकर

लौकिक रीति भाँति भी अन्य मतों से किन्हीं अंशों में विलक्षण ही जैसी नियत की—और जब तक कुछ किसी विषय में अन्य से भेद न होगा तक तक उस धर्म की विलक्षणता भी ज्ञात न होगी न वह धर्म उन्नति को प्राप्त होगा और न वह कोई पृथक् मत समझा जायगा—और यह बात ठीक भी है क्योंकि जब तक दूसरों से किन्हीं लौकिक रीति भाँति आदि में अन्तर न होगा तक तक भेद की प्रतीती ही नहीं हो सकती और श्री देव ने तो एक आशय से एक पृथक मत खड़ा किया और लौकिक रीति भाँति में भी अन्य हिन्दू मतबादियों की अपेक्षा कुछ विभेद किया, कि जो लोग उपदेश सिद्धि परिचय से 29 धर्मारूढ़ हुये और बड़ी कठिनता से मद्य मांसाहारी पाखण्डी स्वर्ग वा मोक्ष का ठेका लेने कहने वाले जनों के जाल से निर्मुक्त हुये फिर उक्त दोषों में न बँध जावें और बराबर इन्हीं शिक्षाओं पर चलते हुये अर्थ धर्म काम मोक्ष जो मनुष्य शरीर रूप बृक्ष के चार फल हैं उन को प्राप्त कर सुख के भागी होवें ।

प्रश्नः परम्परागत दो प्रकार की विद्याओं में से एक परा दूसरी अपरा में से श्री देव जी का उपदेश किस बिद्या से बिशेष सम्बन्ध रखाता है?

उत्तरः श्री देव का उपदेश विशेष्कर परा—अर्थात् ब्रह्म

विद्या–वा बेदान्त मत से सम्बन्ध रखता है परन्तु परा विद्या का आशय यह न समझ बैठना कि जो आधुनिक बेदान्ति सब अग्नि होत्रादि कर्तव्य कर्मकाण्ड सम्बन्धी कर्मो को त्याग अबिद्या की मूर्ति अहं ब्रह्मस्मि बन बैठे हैं–वैसा उपदेश किया हो–सो नहीं–किन्तु कर्मकाण्ड से ज्ञान काण्ड की वृद्धि करते और निरन्तर अभ्यास करते हुये संसारी बिषयों से उपराम हो कर संसार महोदधि के पार होने की बिधि उपाय वा साधन का जिस पुस्तक में अधिकता से उपदेश ब्याख्यान किया है उसका नाम परा बिद्या है।

प्रश्नः कौन सम्बत् में उपदेश करने का आरम्भ किया था और किस सम्बत् में मत फैला?

उत्तरः साधारण रीति से तो उपदेश बाल्यावस्था ही से करते रहते परन्तु विशेष उपदेश करने का आरम्भ विक्रम संवत्सर 1542 में विशेष प्रचार हुवा ।

प्रश्नः किस सम्वत् में अन्तर्ध्यान हो गये और कहां हो गये?

उत्तरः विक्रमीय सम्वत् 1593 मिगसर बदी 9 नववमी के तीसर प्रहर लालासर नामक ग्राम के जंगल में

अन्तर्ध्यान हो गये–यह ग्राम बीकानेर राज्य में है ।

प्रश्न अन्तर्ध्यान होने के समय कुछ अपने शिष्यों को उपदेश किया ?और क्या कुछ शिष्यों ने पूछा भी था ?
उत्तरः अन्तर्ध्यान होने से 3 दिन प्रथम अपने समीपवत्तर्ती शिष्यों को अर्थात जो राज्य मारवाड़ के अर्न्गत निवास करते थे– श्री देव ने उन सब को सूचना दे दी थी कि हम मंगसिर बदी 9 नवमी के तृतीय प्रहर अन्तर्ध्यान होंगे– फिर बहुत से शिष्य लोग क्या साधु और गृहस्थ उक्त तिथी में एकत्रित हो गये और उन सब को श्री जम्भदेव जी ने यह उपदेश किया कि हे सत्यधर्म के अवलम्बियों यह संसार ही जब नश्वर है तो इस में बर्त्तमान रचित पदार्थ क्या नित्य एक रस रह सकते हैं ?कदापि नहीं । सब संयोगी पदार्थ बियोगी होते हैं संसारी भोगों के भोगने से तृप्ति तीन काल में भी न होगी इनके भोगों से तृप्ति तीन काल में भी न होगी इनके भोगों से तृप्ति की कामना करना वृथा है । धन कुटुम्ब अवस्था का अहंकार कभी नहीं करना सर्वोपरि कर्त्तब्य काम मनुष्य का निर्वाण के अर्थ प्रयत्न करना है–विष्णु की सब प्रजा हैं शुभमार्ग के चलने वाला उस से प्रेम किया जायगा–दान दया का सदा

स्मरण रखना, जीव हिन्सा कभी न करना देव्यादि कल्पित देवों के लिये जो कोई ब्राह्मणादि किसी बकरा आदि का बलि देने को कहे वा अग्नि में अपवित्र बस्तु मद्य मांस आदि जलाने को कहे कभी मत मानना जो इस प्रकार की बिधि वा आज्ञा बतावे उस मनुष्य के कथन और पुस्तक के उस लेखको सर्वथा मिथ्या भूत समझना–कितने ही मनुष्य तुम को मेरी शिक्षा से चलायमान करैंगे और ब्राह्मण तथा अन्य मतावलम्बी साधु तुम पर अपना मत रूपीं जाल डालेंगे परन्तु मेरी शिक्षा रूप कराल कृपाण द्वारा छेदन करके स्वीयमत अर्थात् (बिश्नोई) मत में संस्थित रहना । 29 धर्मो का सदा सेवन करते रहना अपनी सिद्धियों आदि के परिचय से तुमको भूलाने वाले वा बोलने में प्रगल्भ बहुत मिलेंगे परन्तु कभी उक्त शिक्षाओं का परित्याग न कर बैठना नहीं तो नरक में पड़ोगे प्राण भले ही जायें परन्तु कभी ज्ञात हिंसा न करना और मोह की धारा में मत बह जाना, सदा श्री बिष्णु भक्ति में तत्पर रहना सब बेदादि शास्त्रों को सुन पढ़ कर तत्व बस्तु का ग्रहण कर लेना और हिंसा पाखण्ड युक्त लेख का चाहे किसी शास्त्र का लेख क्यों न हो कभी मान्य न करना, कोई चिन्हके धारण मात्र से निर्बाण नहीं पा सकता सर्वत्र साधन वा

अभ्यास रूप कर्म ही प्रधान है सच्ची प्रीति के साथ नियमों पर चलने वाले मेरे बिश्वासियों को निर्वाण का द्वार सुलभ है– और सम्भराथल पर अमावस्या में सदा घृतादि सुगन्धित पवित्र पदार्था के योग से होम किया करना औ 6 महीने के पीछे एक वृहद् होम (बड़ा होम) अमावस्या में करना–और प्रत्येक महीने की अमावस्या में शुभ कामों के करने बिचारने के अतिरिक्त मत सम्बन्धी बिचार भी करना अर्थात 29 शिक्षाओं के प्रचार का प्रबन्ध करना और जो कोई बिश्नोई नियम बिपरीत आचरण करने लगे तो उसको दण्ड देकर वा प्रायश्चित कर कराके ठीक कर लेने की शिक्षा देना, यदि कोई माँसाशी हो जावे और मद्य पान करने लगे और अन्त्यजों का खान पान करले तो उसको सर्बथाही इस मत वा जाति से निकाल देना–और फिर कभी न मिलाना प्रतिदिन दिन भर के किये कामों का स्मरण कर रात्रि में सोना, और जो कोई अशुभ काम हो गया हो तज्जन्य पाप निवृत्ति के अर्थ श्री बिष्णु महाराज से अभ्यर्थना करनी और पश्चात्ताप करना और भविष्यत में वैसा अशुभ कर्म न करने की दृढ़ शपथ करना और शुभ काम को जो मन तन बचन से हो गया हो संस्मरण न करना अर्थात् भूल जाना–और नियम पूर्बक शब्दोपदेश

रूप बाणी का पाठ करना और इनको कभी मत भूलना–और अमावस्या में अपने अपने नगर ग्राम में सब को एकत्रित होकर इस मत के यती सहित होम करना–और जिन को हमने इस मत में संस्कार करने तक में नहीं पूछा उन का कभी इस मत में प्रवेश न होने देना वे तुम पर अपना पाखण्ड रूप जाल डालने का यत्न करेंगे परन्तु कभी उनकी मत–विपरीत बातों को न सुनना क्योंकि उन के संसर्ग वा मत दोष से पाखण्ड तथा दृढ़ अविद्या के जाल में बँध जाना होगा और बकरा आदि पशुओं का गला काट कर देव्यादि और मित्र वरूण के लिये बलिदेना आदि अनेक पिशाच रोग पीछे लग जायेंगे और वे कर्म अगाध दुःख रूप समुद्र के आवर्त्त में सदा घुमावेंगे जिन–जिन आत्मा के अहितकारी नरक प्रद क्रूर कर्मो का तुमसे त्याग कराया है और अनेक मत के झगड़ों से बचाकर तथा ब्रह्मणों के प्रबल जाल से छुड़ाकर स्वतंत्र बना दिया है उन सब उत्तम कर्मो वा साधनों को कि जिन को ब्राह्मण अपने सिवाय दूसरों को करने का अधिकार नहीं बताते थे तुमको सम्यक् दर्शा दिया जो सत्य ज्ञान कल्याणकारी मनुष्य मात्र के लिये ब्रह्मदि तत्वदर्शी पूर्वज जिन किन्हीं महात्माओं ने बेदों उपनिषदादि द्वारा बर्णन किया था उस को ब्राह्मणों ने छिपा रक्खा और ब्राह्मण से भिन्न

पढ़ने वाले के कान में लाख कंच पिला देने का हुक्म लगा दिया, अग्निहोत्र और ब्रह्मज्ञान का अधिकारी कोई अपने से भिन्न भूमण्डल में नहीं बताया–इत्यादि उस सत्य मार्ग की सब बातें मैंने तुमको बतलाई और ऐहिक पारलौकिक सुख प्राप्ति का सच्चा मार्ग जिस में कोई रोक टोक नहीं है बताया अब जो इस मार्ग में बराबर चले जाओगे तो कभी दुःख रूप सागर में नहीं गिरोगे–फिर सब शिष्यों ने अभ्यर्थना करी कि महाराज़ आपके बचनों का कभी त्याग नहीं करेंगे परन्त् अब तक तो आप की ज्योति इस जगत् में प्रकट थी हम को परम आधार और प्रकाश था अब अपनी जगह किसे बताते हो कि जिसका दर्शन करने से आप का दर्शन होना समझें–फिर श्री देव ने कहा कि नित्य प्रति मेरे दर्शन की इच्छा करने वालों को उचित है कि सादर होम किया करें और होम की ज्योति को मेरा रूप समझें और सम्भराथल पर सदा बिद्यमान समझना इत्यादि प्रकार का उपदेश किँया।

प्रश्नः क्या कोई ऐसा मेला इन लोगों का कहीं होता है कि जहां पर ये लोग दर्शन करने जाते हों और वहां जाकर क्या किसी मूर्ति को पूजते हैं?

उत्तरः सब लोगों का परम तीर्थ वा पूज्य स्थान श्री जम्भेश्वर जी महाराज की समाधि और वह स्थान है कि जहां पर चिरकाल तक विराजमान रहे और उपदेश किया–जिसका नाम संम्भराथल है–फागुन की अमावस्या को यहां पर दूर दूर के बिश्नोई आते हैं और समाधि का दर्शन और होम करते हैं और समाधि स्थान से 2 मील जंगल में उस संभराथल स्थल पर अमावस्या में बड़ा होम करते हैं । इस होम में अनुमान सत्तर अस्सी मन के लगभग घृतादि सामग्री होमी जाती है और एक मेला चैत्र की अेमावस्या को राज्य जोधपुर में प्रसिद्ध फलौधी नगर से 7 कोश दूरी पर (जम्भसरोवर पर) होता है यह सरोवर श्री देव ने स्वयं बनाया था–और इस जगह जो एक ग्राम है वह भी श्री जी के नाम से प्रसिद्ध है अर्थात उस ग्राम का नाम श्री जाम्भा है और भी छोटे छोटे कई पूज्य स्थान हैं–उन सब का वृत्तान्त श्री जी के जीवनचरित्र में सविस्तर लिखा है ।

प्रश्नः हिसार प्रान्त में बिश्नोई कब गये?

उत्तरः 1869 बिक्रमीय बत्सर में हिसार प्रान्त में मारवाड़ से गये और प्रथमही प्रथम झूंपा नाम ग्राम बसाया और मारवाड़ में दुर्भिक्ष भयंकर हो गया था इसलिये छोड़ना पड़ा ।

प्रश्नः क्या कोई लोग अपने प्राचीन अभिजन नगर भूमि का दर्शन करने जाते हैं और वहां पर कोई चिन्ह पूजनीय हैं ?

उत्तरः नहीं जाते ।

प्रश्नः क्या इनमें स्त्रियां किसी वृक्ष का पूजन करती हैं?

उत्तरः पीपल खेजड़ी तुलसी का पूजन करती हैं और जल से जो सींचना है यही पूजन है ।

प्रश्नः विवाह में क्या पड़ा जाता है ?और अग्निहोत्र करके बिवाह करते है बा नहीं और बिवाह कौन कराता है ?

उत्तरः विवाह में अवतारों की महिमा का बर्णन होता है और परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना की जाती है और अग्निदेव की प्रथम स्तुति की जाती है और अग्नि देव में घृतादि सामग्री होमी जाती है और बहुधा यह बिवाह पद्धति भाषा और संस्कृत में है और बिवाह कराना इस मत के थापन जो पुरोहित आचार्य के नियत किये हैं इन्ही ही के अधिकार में है और यही प्रायः कराते हैं और यही आज्ञा आचार्य की है।

प्रश्नः समाधि मन्दिर कौन सम्बत् में बना और किसने बनाया ?

उत्तरः समाधि की नीव बिक्रमीयाब्द 1593 मगशिर बदी 11 को ग्राम तालवे में रक्खी गई और ठीक सोलह सौ सम्बत् में बन कर तैयार हुई और रणधीर जी महाराना ने जो श्री देव के प्रधान शिष्य थे मन्दिर बनाया और इसके बनाने में बीकानेर के राजा श्री जैतसी ने भी कुछ सहायता दी थी, यह समाज मन्दिर जाली झरोखों से युक्त शिवालय के आकार अर्थात एक मठ के समान अति रम्य और दृढ़तर बीकानेर से 20 कोस दूरी पर राज्य बीकानेर में बिद्यमान है ।

प्रश्नः क्या इस समाधि मन्दिर में पूजा होती है और कुछ जमीन आदि खरच के लिये किसी राज दरबार वा बादशाही दरबार से मिली है और वहां के लिये और कुछ रक्षा प्रबन्ध किया गया है?

उत्तरः इस मन्दिर में दोनों समय अर्थात सूर्योदय और सूर्यास्त में केवल होम होता है और दूसरी कोई पूजा नहीं होती है, हां समाधि को तो नमस्कार करते हैं और कोई नियत आमदनी मन्दिर में नहीं होती जो यात्री लोग फागुन की अमावास्या पर आते उन में से बहुधा

मौठ चढ़ाते हैं कभी कभी दो हजार मन कभी पांच सौ मन अन्न आ जाता है और कभी सौ मन ही आता है कोई निश्चित नियत आमदनी नहीं है—और कुछ रूपया भी आ जाता है । इस आमदनी के सर्वथा मालिक यहां के थापन लोग हैं परन्तु मन्दिर की यथा योग्य मरम्मत पर कोई ध्यान नहीं देता—बादशाही बख्त में अर्थात् मुसलमानों के राज्य समय में इस मन्दिर के निमित्त कुछ भूमि तो इसही तालबे नामक ग्राम में जहां पर मन्दिर है चोखा थापन को प्रबन्धकर्त्ता नियत कर प्रदान की थी और चोखा थापन ने अपनी स्न्तान की आजीविका के लिये इलाके बीकानेर और जोधपुर के 35 ग्रामों में मन पीछे 1 सेर अन्न—और प्रत्येक बिवाह में 3) रूपये बीश्नोईयों से सन् हिजरी 180 बिक्रमीय बत्सर 1620—सन् ईसवी 1563 में हुये दिल्ली के बादशाह से नियत करा लिये थे और महसूल माफ हो गया था और मन्दिर की सीमा भूमि में शिकार खेलने की मनाई बादशाह की ओर से हो गई—यह बात हम को मोती थापन गंगा ग्राम निवासी से मालूम हुई—उसके पास 980 हिजरी के लिखे परवाने में देखने से ज्ञात हुवा फिर उस ने उस की एक नकल हम को दी उसली नकल तो उस ही के पास है अर्थात् उसने हम को

असली नकल की नकल मुद्रित कराने की इच्छा से दी सो हम उसको सर्व साधारण के अवलोकनार्थ प्रकाशित करते हैं–और तो इस परवाने में थापनों की आजीविका की बातें हैं हमारे प्रयोजन की दो बाते हैं एक तो शिकार खेलने का निषेध दूसरी मन्दिर के अर्थ भूमि प्रदान का करना–यह परवाना अकबर बादशाह के समय का प्रतीत होता है क्योंकि उन दिनों अर्थात 180 हिजरी सन् में तवारीखों के हिसाब से कोई बादशाह देहली का सिवाय अकबर के न था–बादशाह की मोहर असली परवाने में है इस नकल में नहीं थी– परन्तु और नकल सब असली के अनुसार है ।।

इस का हिन्दी अनुवाद–नकल मुताबिक असल शार्यशरण राव कल्याणसिंह वाली बीकानेर को यह मालूम हो कि जो आजकल थापन चोखा ने सदर कचहरी में आकर निवेदन किया कि अपने साथ बहुत सी जमात रखता है–और कोई वजह गुजारे की मुकर्रिर नहीं है इस लिये उम्मेदवार हैं कि हमारे गुजारे की सूरत नियत हो जावे–फिर यह अर्जी उन की हजूर तक पहुँची हुक्मन मंजूर इस वास्ते माफिक हुक्म के लिखा जाता है कि फी शादी (विवाह) 3) बीश्नोईयों से दिलाते रहो–और गांव तालवे में जमीन करीब 800

आठसौ जरीब पुखता मन्दिर के पीछे दरबार बादशाही से दी गई है– और दश घर मोचियों के मन्दिर की जमीन में रहते हैं जो कुछ टहल सेवा आदि मन्दिर की होगी वह सब करते रहेंगे कुल जमीन तीन हजार पुखता जरीब से मन्दिर के पीछे है–जब मेला होगा–बीका–मनोहर सिंह कुवे से पानी खींच कर मेले वालों को पिलावेगा और गांव हिमढ़सर उत्तर कोण में है और गांव खींचियासर दक्षिण को है और गांव धूपालिया पूर्व को है ।।

अणखीसर आदि 20 बीस गांव इलाके जोधपुर के और 15 पन्द्रह गांव इलाके बीकानेर के कुल 35 गांव तो मन्दिरवालों को देते रहेंगे अर्थात मन पीछे एक सेर गरज है कि बिश्नोई मन्दिर वालों को देते रहेंगे । और उनके ही कब्जे (अधिकार) में रहेगा और गांव जंगल में उस जगह शिकार करना (खेलना) हरेक छोटे बड़े को मना है–और तमाम चीजों का महसूल उनको माफ कर दिया गया है–तारीख 15 जियेकद सन् 980 हिजरी ।

दरवार तारीख 15 जियेकद । नकल दफ्तर हजूर बाला–नकल दफ्तर दीवान आलिया (बड़ा) बादशाही परवाने की नकल जो फारसी जबान में थी उसका हमने हिन्दी में अनुबाद ऊपर दे दिया है सो जरूर

समझ लेना।

अभीतक इस परवाने के माफिक बर्ताव सर्बथा हो रहा है । चोखाथापन के बंश के लोग बीश्नोईयों से लिखे प्रमाण उक्त इलाकों में अपना बन्धान भी वसूल कर लेते हैं–और सम्भराथल के चारों तरफ पशुओं के अर्थ जंगल भी लिखे प्रमाण छुटा हुवा है जो जंगल धर्मार्थ पशुओं के लिये राजा बादशाहों ने छोड़ा है उसे मारवाड़ में (अउण) बोलते हैं–आशय यह है कि और तो सब बर्ताव परवाने के अनुसार होता ही है परन्तु मन्दिर पुजारी मन्दिर की रक्षा करने में अर्थात् टूटे फूटे तक की नहीं करते और नवीन स्थान तो क्या बनाना था–धन्यबाद है इस मत मे महात्मा श्री चैनरामजी आदि साधुओं को कि जिन का मन्दिर आमदनी से कुछ भी सम्बन्ध नहीं था तब भी भिक्षार्जन धन से मन्दिर के आस पास कुछ मकान बना गये कि जिन के बनाने से मन्दिर की कुछ सुस्थिरता और रम्यता हो गई यदि बर्तमान के समान मन्दिर की दशा रही और पुजारी आदिकों ने इस की रक्षा पर ध्यान न दिया तो मन्दिर का सुस्थिर रहना दुस्तर होगा । ऐसा यज्ञ नैमित्तिक उत्तम स्थान राजपूताने में होने के अतिरिक्त भूमण्डल में नहीं होगा–जहां पर प्रतिदिन सामान्य होम होने के अतिरिक्त वर्ष में दो होम बड़े भारी होते हैं एक तो

असौज महीने की अमावास्या में दूसरा फागुन की अमावास्या में जिसमें सत्तर अस्सी मन घृतादि हव्य सुगन्धित पदार्थो का होम होता है जो दूर दूर तक वायु का शोधन कर प्राणियों के जीवन का मूल होता है–अतिरिक्त इसके अनेक बकरा हरिणादि पशु और पक्षियों के प्राणत्राण का उत्तम आश्रय है इस महोपकार का निमित्त यह समाधि मन्दिर ही है धन्य है वह भूमि और वह प्रजा और राजा कि जहां पर इस कलिकाल में ऐसा अनुपम शुभ काम हो रहा है कि जो सत्ययुग की समता रखता है–स्मरण रहे कि यह राव कल्याणसिंह जी जिनका नाम परवाने बादशाही में आया है महाराजा बीकाजी के प्रपौत्र (पड़पोते) थे यह बीकाजी श्रीदेवजी के परम भक्त थे और इन्होंने ही बीकानेर बसाया था यह सब प्रसंगवंश लिखा गया ।

प्रश्नः क्या इन लोगों की कोई बंशावली भी लिखने भाट आदि आते हैं ?

उत्तरः हां आते हैं और वे बंशावली लेखक हिन्दू भाट हैं–यद्यति बंशावली लिखने का काम तो आचार्य ने गावणों को ही बताया था–परन्तु गावणों ने लिखना छोड़ दिया और दूसरे भाट आकर लिखने लगे ।

प्रश्नः गावण इस मत में कौन समझे जाते हैं और उनके क्या काम हैं सर्व साधरण बिश्नोई लोग इन को क्या समझते हैं वा आचार्य ने क्या काम बताये थे?

उत्तरः आचार्य ने गावण एक प्रकार के भाट नियत किये थे और सर्व साधारण बिश्नोई लोग भी भाट समझते हैं परन्तु समय के हेरफेर से आचरणों में तारतम्य हो गया—गावणों के काम यह हैं—गान बिद्या और कबित्त छन्द बनाने का अभ्यास करना और बंशावली लिखना मत सम्बन्धी इतिहास पतेवार लिखते रहना—तथा अमुक उपदेशक वा परोपकार वृत्तधारी धर्मबीर मनुष्य फलाने सम्बत् में हुवा और उसने परोपकार सम्बन्धी अमुक अमुक काम किये और उस वृत्तान्त को जो कबित्त को जो कबित्त छन्दों में लिखा हो—अपने दातार (बिश्नोई) लोगों को गा कर तथा पढ़ कर सुनाना—बिबाहादि उत्सवों में जाकर और बिश्नोई लोगों से पारितोषिक पाना तथा उन के पूर्वजों का चरित्र अपनी कबिता में सुनाना 3 और जो कोई प्रेतशव (मुर्दे) के बस्त्र बर्त्तन आदि प्रदान करे उन बस्तुओं का ग्रहीता भी गावण होवे।

गावण उपाधि पाने से प्रथम भी यह लोग भाट थे और श्री जम्भेश्वर जी ने तो अन्य का इस मत में प्रवेश

होने का काम नहीं रक्खा था इसलिये गावण भी इन लोगों में ही से एक लौकिक ब्यवहार के निर्वाहार्थ पृथक् नियत किये थे गावण सिवाय बीश्नोई के प्रायः किसी से याचना नहीं करते और भाट होने पर भी बिश्नोईयों के तुल्य धर्म का पालन करते हैं और अपना परम इष्ट देव श्री जम्भदेव जी को ही मानते हैं–परन्तु बंशावली लिखना भूल गये और थापनों के स्थानापत्र होने की उत्कण्ठा करने लगे–यह श्री देव की आज्ञा से इन का बर्त्ताव प्रतिकूल हो चला–इसका निवारण करना धीमानों का कर्त्तव्य काम है ।

प्रश्नः जब यह लोग परस्पर में मिलते हैं तब नमस्कार आदि किस प्रकार करते हैं अर्थात् नमस्कार का कम क्या था जो आचार्य ने बताया था?

उत्तरः आचार्य ने जो कर्म नमस्कार का बताया था वह तो अब बहुत थोड़ा रह गया है । परस्पर में मिलकर नवन करते हैं प्राचीन प्रथा आचार्य की नवन प्रणाम करने की है प्रत्यभिबाद (नमस्कार के उत्तर) में श्री विष्णु को नवन करना बताया–इसका फल अभिमान निराकरण पूर्वक परमेश्वर का स्मरण करना आदि है–अर्थात् प्रत्यभिबाद दाता कहता है कि बिष्णु को

अर्थात मुझ तुच्छ जीव को प्रणाम क्या किन्तु हम तुम सब परमेश्वर को बारम्बार प्रणाम करें वा उस का धन्यबाद करें–परन्तु अब केवल नवन प्रणाम कहने करने की रीति प्रान्त में ग्रहस्थियों में रह गई है ।

प्रश्नः श्री देव जी क्या चाहते थे ?–अर्थात् उन का परमाशय क्या था ?

उत्तरः श्री देव जी का आशय था कि सब लोग कर्म काण्ड की उन्नति करते हुये–निर्वाण की योग्यता प्राप्त करें और पाखण्ड जाल का ध्वस्त करें कोई मांस मद्यादि दुर्ब्यसनों में न फँसे फलाहारी और सात्विक भोजन के आहारी बनें किसी जीव को ज्ञात–पने से न सताया जावे सर्वत्र भारत में होम होने लगे बिष्णुदेव प्रसन्न होवें और रोग पाप दूर होवें किसी पशु का बलिदान कोई न करे कोई मनुष्य देव्यादि कल्पित कुदेवों को न मानें पूजें केवल श्री बिष्णु के उपासक बनें और अग्नी को भी अपना पूज्यदेव समझें–सब बेद उपनिषदादि शास्त्रों के तत्व का ग्रहण करें और उसका ही जगत् में प्रचार करें मनुष्य मात्र निर्वाण की योग्यता प्राप्त करने का अधिकारी है केवल ब्राह्मण ही जो अपने को स्वर्ग मोक्ष का और वेदादि शास्त्र पढ़ने का

अधिकारी बताते हैं यह उनका कथन सर्वथा मिथ्या समझें । सब शास्त्रों में से ऐहिक पारलौकिक में होने वाले सुख साधनों के तत्व का ग्रहण करें और हिंसा भाग को असत्य लेख समझें और उसका त्याग कर देवें और बीसनोई धर्म की शिक्षा का जगत् में प्रचार करें और जो इन शिक्षाओं के धारक हों उनका समुदाय पृथक ही रहे दूसरों के साथ भोजन और विवाहादि सम्बन्ध भी न करें जगत् में सब मिलकर धर्म की दुन्दुभि बजावें धर्म का शंख पूरें अधर्म का नाश करें शक्ति के अनुसर दान पुण्य करें वापी कूप धर्मशाला बनावें फलदार वृक्ष लगावें तात्पर्य यह है कि जिस से संसार का उपकार हो और 29 धर्मपदेश के अवलोकन से ही आशय ज्ञात हो जाता है यह संक्षेप से प्रसंगवश लिख दिया ।

प्रश्नः यह तो हमको ज्ञात हो गया कि इस मत के नियम बड़े कठिन तपस्वियों के ही पालन योग्य हैं और इन नियमों के धारक जन के लिये निःसन्देह मोक्षका द्वार खुला हुवा है परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि जितने मनुष्य इस मत समुदाय में हैं और जहां जहां बसते हैं उन सबका मत सम्बन्धी नियमों के पालन करने विषयक

बर्त्ताव एकसा ही है वा कुछ किसी विषय में विभेद धर्माश में हो गया है क्योंकि देश भेद से तो वास्तव में मत में तारतम्य नहीं हो जाता किन्तु किन्हीं वाह्या ऊपरी आचरणों में अंतर हो जाना असम्भव नहीं है।

उत्तरः मत सम्बन्धी नियमों के पालन करने में तो सर्वत्र सब मनुष्यों का बर्त्ताव एकसा है–किन्तु कुछ वाह्य आचरणों में तो विभेद एक दो बात में है। यथा राज्यस्थान (राजपूताने) वा मारवाड़ में और हिसार प्रान्त में रहने वाले लोग सिर के बाल मुंडवा देते हैं परन्तु इनसे भिन्न देशों में बसने वाले सिर के बाल नहीं मुँडवाते–और बहुधा श्राद्धादि भी करते हैं–मारवाड़ी नहीं करते।

जिज्ञासु–हमको ठीक ज्ञात हो गया कि विश्नोई एक मत स्वतंत्र गोसाई और बौद्धों के सदृश जुदा मत है–और यह मत सन्त मत है, यह भी हम को प्रतीत हो गया कि इस मत का सिद्धांत सर्वथा प्रशसनीय और सत्य है, मत प्रचारक ने केवल यथार्थ वा तत्व बात पर विशेष ध्यान दिया है अर्थात् जो जो मनुष्य के लिये कल्याणकारी शिक्षा हैं उनको निष्पक्ष होकम सर्वसाधरण मनुष्यों पर प्रकट किया–उन परोपकारी जगद्धितैषी दयालु को हम जितना धन्यबाद करें और

बारम्बार उनके चरण कमलों को प्रणाम करें वह सब उनके उपकार के सन्मुख तुच्छ है । अब हम आपको नमस्कार के अर्थ किस शब्द का उच्चारण करें जो आपको अपने मतानुसार अधिक प्रिय हो ?

उत्तरः हमको अति प्रिय नवण प्रणाम है क्योंकि श्रीदेव जी महाराज की आज्ञा के अनुकूल है और वे ही हमारे परम पूज्य इष्टदेव हैं निश्चय तथा बिश्वास का ही नाम मत है अतएव मैं आप और उन सब सज्जनों को सूचित करता हूं कि जो मेरे मित्र वासहयोगी प्रेमी जन हैं सब नमस्कार करने विषयक अन्य शब्दों का प्रयोग न कर नवण प्रणाम का प्रयोग करें।

जिज्ञासु–अच्छा तो नमो नमः

उत्तरः विष्णेवः नमः।

इति शम्

श्री जम्भेश्वरीय मतावलम्बी

ब्रह्मानन्द स्वामी

कांट–जि.मुरादाबाद

हमारे प्रकाशन

1. जम्भेश्वर शब्दवाणी
2. जम्भसार भाग एक
3. जम्भसार भाग दो
4. प्रहलाद चरित्र
5. जम्भाणी भजन माला
6. जाम्भाणी आरती साखी भजन संग्रह
7. विश्नोई धर्म विवेक
8. जाम्भाणी नित्य नियमावली
9. जाम्भोजी के अनमोल वचन
10. जाम्भोजी का जीवन चरित्र
11. जाम्भाणी हवन व जागरण विधि
12. उन्तीस नियम
13. जम्भेश्वर पंचांग (डायरी)
14. विश्नोई कलैण्डर
15. रंगीन दो पेज कलैण्डर

मुद्रक : जम्भेश्वर ऑफसेट प्रिन्टिंग प्रेस
बज्जू फोन : 01535–233037